गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

हिंदी उस चौपाल की भाषा है, जहाँ कश्मीर से कन्याकुमारी तक के लोग एक आंगन में बैठकर बातचीत कर सकते हैं।

राजपाल

सत्र : 2024-25

सितंबर, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 09 सितंबर 2025
भाद्रपद-आश्विन | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - एक परिचय

एक अमर देशभक्त और सामाजिक न्याय के योद्धा
विविध
साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
राष्ट्रीय एकता की संवाहक है हिंदी
प्रथम शिक्षक और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत
पुस्तक समीक्षा

संदेश

सितंबर माह का यह समय हमारे लिए विशेष रूप से गौरव और चिंतन का क्षण लेकर आता है। इस माह में हम तीन ऐसे महत्वपूर्ण दिवस मनाते हैं जो शिक्षा, समाज सुधार और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक हैं - शिक्षक दिवस, ज्योतिबा फुले प्रथम शिक्षक दिवस और हिंदी दिवस। शिक्षक दिवस हमारे उन आदरणीय गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है, जो ज्ञान की ज्योत जलाकर युवा पीढ़ी के जीवन को प्रकाशित करते हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के आदर्शों पर चलने वाले हमारे शिक्षकगण न केवल विषय की जानकारी देते हैं, बल्कि चरित्र निर्माण और मूल्यों का संचार कर समाज के जिम्मेदार नागरिक तैयार करते हैं। इस अवसर पर, ज्योतिबा फुले को 'प्रथम शिक्षक' के रूप में याद करना विशेष महत्व रखता है। उन्होंने स्त्री शिक्षा और समाज के वंचित वर्गों के लिए शिक्षा के द्वार खोलकर एक क्रांतिकारी परिवर्तन का सूत्रपात किया। उनका जीवन हमें सिखाता है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की सबसे शक्तिशाली कुंजी है। हिंदी दिवस के रूप में हम अपनी राजभाषा और सांस्कृतिक एकता का उत्सव मनाते हैं। हिंदी न केवल हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय पहचान का अभिन्न अंग भी है। हमारा दायित्व है कि हम शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें। इन तीनों दिवसों का सार एक ही सूत्र में बंधा है - ज्ञान का प्रसार, सामाजिक न्याय की भावना और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण। मैं सभी विद्यार्थियों से आग्रह करता हूं कि वे अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन का सदुपयोग करें, ज्योतिबा फुले के आदर्शों से प्रेरणा लेकर समतामूलक समाज के निर्माण में योगदान दें और हिंदी के प्रयोग से ज्ञान को सर्वसुलभ बनाएं। आइए, हम सब मिलकर एक ऐसे शैक्षिक वातावरण का निर्माण करें जहाँ गुरु का आदर, समाज सुधार की चेतना और मातृभाषा का गौरव सदैव विद्यमान रहे।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

त्रिवेणी संगम: गुरु, क्रांति और भाषा का महापर्व

सितंबर माह की यह पावन बेला हमारे लिए तीन स्तंभों—शिक्षक दिवस, ज्योतिबा फुले और हिंदी दिवस—के समन्वय का अनूठा अवसर लेकर आई है। ये तीनों दिवस हमारे शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के वे आधार हैं, जो एक सुविकसित राष्ट्र की नींव रखते हैं। शिक्षक दिवस हमें गुरु-शिष्य परंपरा की अमर बेल याद दिलाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के व्यक्तित्व में शिक्षक का आदर्श रूप देखने को मिलता है—जहाँ ज्ञान के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का संवाहक बनना भी आवश्यक है। आज के डिजिटल युग में भी शिक्षक का स्थान अतुलनीय है, क्योंकि वही मशीनी ज्ञान को मानवीय संवेदना से जोड़ता है। वहीं ज्योतिबा फुले की शिक्षा को सामाजिक न्याय से जोड़ती है। उन्होंने शिक्षा को वंचित तबके तक पहुँचाकर सिद्ध किया कि शिक्षा ही वह हथियार है, जो जड़ताओं और विषमताओं को तोड़ सकता है। आज भी उनका संघर्ष हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री देना नहीं, बल्कि चेतना का प्रसार करना है। हिंदी दिवस इस त्रिवेणी का तीसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है। हिंदी हमारी राष्ट्रीय एकता की संवाहक है, लेकिन आज इसके सामने अंग्रेजी के वर्चस्व की चुनौती है। हिंदी को केवल राजभाषा का दर्जा देना पर्याप्त नहीं; इसे ज्ञान-विज्ञान और तकनीक की भाषा बनाना होगा। इन तीनों विषयों का सामंजस्य हमें एक संदेश देता है—ज्ञान की शक्ति, समाज की एकता और भाषा की गरिमा के बिना राष्ट्र निर्माण अधूरा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम शिक्षा को रूढ़िगत सीमाओं से मुक्त करें, ज्योतिबा फुले के सपनों को साकार करने के लिए शिक्षा को समावेशी बनाएँ और हिंदी को आधुनिक ज्ञान की भाषा के रूप में स्थापित करें। हमारे महाविद्यालय का दायित्व है कि वह गुरु, समाजसुधारक और मातृभाषा—इन तीनों के समन्वय से ऐसे युवा तैयार करे, जो राष्ट्रनिर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकें। आइए, इस त्रिवेणी के पावन संगम पर हम संकल्प लें कि शिक्षा, समानता और भाषा—इन तीनों मूल्यों को हम अपने जीवन में आत्मसात करेंगे।

संपादक

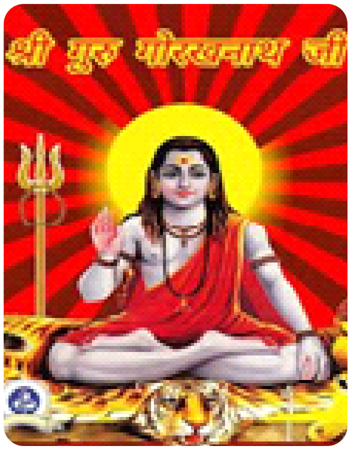

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत है कि शंकराचार्य के पश्चात् गोरक्ष- नाथ के समान प्रभावशाली तथा महिमान्वित महापुरुष भारतवर्ष में दूसरा नही हुआ । गोरखनाथ के नाम से प्रचारित संस्कृत और हिन्दी की अनेक रचनाएँ हैं। मिश्रबन्धुश्रों ने सर्वप्रथम गोरक्षनाथ के नौ संस्कृत ग्रन्थों का उल्लेख किया था । आचार्य रामचन्द्रशुक्ल ने बारह पुस्तकों तथा आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने २८ संस्कृत तथा चालीस हिन्दी ग्रंथों का वर्णन किया है । इनके अनुसार संस्कृत की २८ पुस्तकें निम्नलिखित हैं, परन्तु सभी के गोरक्षकृत होने में इन्होंने संदेह व्यक्त किया है :-

अमनस्क, अमरोध शासनम्भ, अवधूत गीता, गोरख कल्प, गोरक्ष कौमुदी, गोरक्ष गीता, गोरक्षचिकित्सा, गोरक्ष पन्चय, गोरक्ष पद्धति, गोरक्ष शतक, गोरक्ष शास्त्र, गोरक्षसंहिता, चतुर्शीत्यासन, ज्ञान प्रकाश शतक, ज्ञानशतक, ज्ञानामृतयोग, नाड़ी ज्ञान प्रदीपिका, महार्थं मंजरी, योग चिन्तामणि, योगमार्तण्ड, योग सिद्धासन पद्धति, विवेक मार्तण्ड, श्रीनाथसूत्र, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, हठसंहिता, हठयोग, योग बीज, योग शास्त्र

डॉ० राम कुमार वर्मा केवल गोरक्षशतक, चतुर्शीत्यासन, ज्ञानामृत, योग- चिन्तामणि, योग सिद्धान्त पद्धति, विवेक मार्तण्ड तथा सिद्ध सिद्धान्त पद्धति को ही गोरखनाथ की प्रामाणिक रचनाएँ मानते हैं । ब्रिग्स ने केवल गोरक्षशतक को सर्वाधिक प्रामाणिक रचना माना है तथा उस का रोमन अक्षरों में संपादन करते हुए अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है ।

हिन्दी में गोरखनाथ के नाम से निम्नलिखित रचनाएँ प्रचलित हैं :-

अभैमात्रा जोग, अवलिसिलूक, अष्टमुद्रा, आत्मबोध, अष्ट पारछ्या, नष्टचक्र भात्मबोध-द्वितीय, इन्द्री देवता, काफिर बोध, खाणी-वाणी, गयान चौतीसा, ग्यान माला, ग्यान तिलक, गोरखदत्त गोष्ठी अथवा ग्यानदीप बोध, गोरखगणेश गोष्ठी, गोरख वचन, चौबीस सिषि, जाति भौरांवली (छंद गोरख), नवग्रह दयाबोध, नरबैबोध, नवरात्र, निरंजन पुरान, प्राणसंकली, पद, पन्द्रह तिथि पंचमात्रा, पंचअग्नि, मछीन्द्र-गोरखवोध, मूलगर्भावली, महादेव गोरख गुष्टि, रहरासि, रोमाबली, व्रत, सवदी, सिष्ट पुरान, मिथ्यादरसन, सप्तवार, षडक्षरी, बतीस लछण, गोरखसंत ।

डॉ० बड़थ्वाल ने 'गोरखबानी' में निम्नलिखित रचनाओं को इस क्रम से सम्पादित किया है :-

गोरखबानी :

सबदी, पद, सिष्या दरसन, प्राण संरली, नरवैबोध, आत्म- बोध, अभैमात्रा जोग, पन्द्रह तिथि, सप्तवार, मछीन्द्र गोरख बोष, रोमावली, ग्यान तिलक, पंचमात्रा ।

परिशिष्ट १. :

गोरखगणेश गुष्टि, ज्ञानदीप बोध (गोरखदत्त गुष्टि), महादेव गोरख गुष्टि, सिस्ट पुराण, दयाबोध, कुछ पद ।

परिशिष्ट २. :

सप्तवार, नवग्रह, व्रत, पंचाग्नि, अष्टमुद्रा, चौबीस सिद्धि, बत्तीस लछन, अष्ट चक्र, रह रासि ।

परिशिष्ट ३. :

सुन्दरतिल क ।

प्रथम पन्द्रह रचनाएँ, जो गोरखबानी शीर्षक से संगृहीत हैं, डॉ० बड़थ्वाल ने निस्संदिग्ध रूप से गोरखनाथ द्वारा रचित मानी हैं। परिशिष्ट १,२ और ३ की रचनाओं के रचियता संदिग्ध हैं क्योंकि कुछ रचनाएँ सेवा दास निरंजनी की मानी जाती हैं तथा अन्य गोरखनाथ की स्तुतिपरक रचनाएँ हैं।

गोरखनाथ द्वारा रचित 'गोरख उपनिषद' प्रथम हिन्दी गद्य रचना मानी जाती है जिसे डॉ० कल्याणी मल्लिक ने 'सिद्ध सिद्धान्त पद्धत्ति एण्ड अदर वर्क्स ग्राफ नाथ योगीज' में प्रकाशित किया है।
गोरखनाथ कृत संस्कृत भौर हिन्दी रचनाओं का यहाँ संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है : -
संस्कृत रचनाएं :- गोरखनाथ की प्रमुख संस्कृत रचनाएं निम्नलिखित हैं :

अमरोधशासनम्

काश्मीर संस्कृत ग्रंथावली (ग्रंथांक २०) म०प० मुकन्दराम शास्त्री के सम्पादकत्व में 'अमरोधशासनम्' का प्रकाशन सन् १६१८ ई० में हुआ था। इस ग्रंथ में 'सारणा' (धातुओं, विशेषकर पारे के शोधन अथवा संस्कार की एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया) का विस्तार से विवेचन किया गया है तथा विभिन्न दर्शन एवं साधना सम्प्रदायों द्वारा स्वीकृत मोक्ष स्वरूपों का खण्डन करते हुए 'सहज समाधिक्रम से जहाँ से मन से मन का समावलोकन किया जाता है, वही मोक्ष है' मत का प्रतिपादन किया गया है। इस ग्रंथ से पिंडज्ञान तथा नाथ मतानुमोदित योगसाधना से प्राप्त कायसिद्धि अथवा अमृतसाधन का ज्ञान होता है । वास्तव में इस ग्रंथ द्वारा गोरखनाथ के सिद्धान्तों एवं साधना पद्धत्ति का संक्षिप्त परिचय प्राप्त होता है ।

गुरु गोरखनाथ के पद

आओ माई धरि धरि जावो । गोरख बाला भरि भरि खाओ ॥ टेक ॥ झरै न पारा बाजै नाद, ससिहर सूर न बाद-विवाद। पवन गोटिका रहणि अकास, महियल अंतर गगन कविलाष। पयाल नीं डीबी सुंनि चढाई, कथंत गोरखनाथ मछिंद्र बताई ॥

जब कुण्डलिनी (धरि) चलकर आकाश (धरि/अधरि) में समा जाती है तो जीवात्मा (गोरख बाला) तृप्त होकर अमृत चखती है। इस स्थिति में बिन्दु नहीं झरता। अनहद सुनाई देता है। चन्द्र और सूर्य नाड़ी में झगड़ा समाप्त हो जाता है। प्राण वायु सहस्त्रार (अकास) में जाकर निवास करती है। इस शरीर (महियल) में ही, गगन में कैलास स्थित है अर्थात् शरीर का एक भाग मस्तिष्क (आकाश) है। उसी में कैलास का स्थान है। पाताल (पयाल) की कुण्डलिनी (डीबी) शून्य मस्तिष्क में चढ जाती है। गोरख कहता है कि मच्छन्दरनाथ ने यह ज्ञान बताया है।

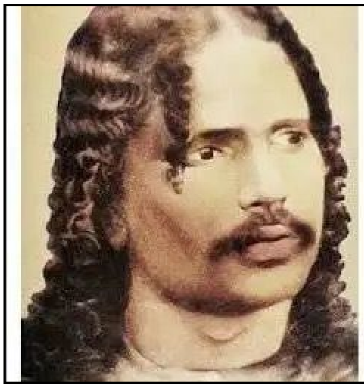

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
एक परिचय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु
जन्म- 9 सितम्बर, 1850 वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
मृत्यु- 6 जनवरी, 1885 वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
पेशा- कवि लेखक,रंगकर्मी, देशहितचिन्तक पत्रकार
राष्ट्रीयता- भारतीय
काल- आधुनिक काल
विधा- नाटक, काव्यकृतियाँ, अनुवाद, निबन्ध संग्रह
विषय- आधुनिक हिन्दी साहित्य
उल्लेखनीय काम- अन्धेर नगरी, भारत दुर्दशा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म ९ सितम्बर, १८५० को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ।[3] उनके पिता गोपालचंद्र एक अच्छे कवि थे और 'गिरधरदास'उपनाम से कविता लिखा करते थे। १८५७ में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु ७ वर्ष की होगी। ये दिन उनकी आँख खुलने के थे। भारतेन्दु का कृतित्व साक्ष्य है कि उनकी आँखें एक बार खुलीं तो बन्द नहीं हुईं। उनके पूर्वज अंग्रेज-भक्त थे, उनकी ही कृपा से धनवान हुये थे। हरिश्चंद्र पाँच वर्ष के थे तो माता की मृत्यु और दस वर्ष के थे तो पिता की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार बचपन में ही माता-पिता के सुख से वंचित हो गये। विमाता ने खूब सताया। बचपन का सुख नहीं मिला।[4] शिक्षा की व्यवस्था प्रथापालन के लिए होती रही। संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतन्त्र रूप से देखने-सोचने-समझने की आदत का विकास होने लगा। पढ़ाई की विषय-वस्तु और पद्धति से उनका मन उखड़ता रहा। क्वींस कॉलेज, बनारस में प्रवेश लिया, तीन-चार वर्षों तक कॉलेज आते-जाते रहे पर यहाँ से मन बार-बार भागता रहा। स्मरण शक्ति तीव्र थी, ग्रहण क्षमता अद्भुत। इसलिए परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते रहे। बनारस में उन दिनों अंग्रेजी पढ़े-लिखे और प्रसिद्ध लेखक - राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' थे, भारतेन्दु शिष्य भाव से उनके यहाँ जाते। उन्हीं से अंग्रेजी सीखी। भारतेन्दु ने स्वाध्याय से संस्कृत, मराठी, बंगला, गुजराती, पंजाबी, उर्दू भाषाएँ सीख लीं।

उनको काव्य-प्रतिभा अपने पिता से विरासत के रूप में मिली थी। उन्होंने पांच वर्ष की अवस्था में ही निम्नलिखित दोहा बनाकर अपने पिता को सुनाया और सुकवि होने का आशीर्वाद प्राप्त किया-
लै ब्योढ़ा ठाढ़े भए श्री अनिरुद्ध सुजान।
बाणासुर की सेन को हनन लगे भगवान॥
धन के अत्यधिक व्यय से भारतेंदु जी ऋणी बन गए और दुश्चिंताओं के कारण उनका शरीर शिथिल होता गया। परिणाम स्वरूप १८८५ में अल्पायु में ही मृत्यु ने उन्हें ग्रस लिया।

प्रमुख कृतियाँ
मौलिक नाटक
- वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति (१८७३ई., प्रहसन)
- पांचवें पैगंबर (१८७३)
- प्रेमजोगिनी (१८७५, प्रथम अंक में चार गर्भांक, नाटिका)
- भारत दुर्दशा (१८८०, ब्रजरत्नदास के अनुसार १८७६, नाट्य रासक), लास्य रूपक
- श्री चंद्रावली (१८७६, नाटिका)
- विषस्य विषमौषधम् (१८७६, भाण)
- अंधेर नगरी (१८८१, प्रहसन)
- नीलदेवी (१८८१, ऐतिहासिक गीति रूपक)।
- सती प्रताप (१८८३,अपूर्ण, केवल चार दृश्य, गीतिरूपक, बाबू राधाकृष्णदास ने पूर्ण किया)

अनूदित नाट्य रचनाएँ
- विद्यासुन्दर (१८६८,नाटक, संस्कृत 'चौरपंचाशिका' के यतीन्द्रमोहन ठाकुर कृत बँगला संस्करण का हिंदी अनुवाद)

- पाखण्ड विडम्बन (कृष्ण मिश्र कृत 'प्रबोधचंद्रोदय' नाटक के तृतीय अंक का अनुवाद)
- धनंजय विजय (१८७३, व्यायोग, कांचन कवि कृत संस्कृत नाटक का अनुवाद)
- कर्पूर मंजरी (१८७५, सट्टक, राजशेखर कवि कृत प्राकृत नाटक का अनुवाद)
- भारत जननी (१८७७,नाट्यगीत, बंगला की 'भारतमाता'के हिंदी अनुवाद पर आधारित)
- मुद्राराक्षस (१८७८, विशाखदत्त के संस्कृत नाटक का अनुवाद)
- दुर्लभ बंधु (१८८०, शेक्सपियर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद)

निबंध संग्रह
- नाटक
- कालचक्र (जर्नल)
- लेवी प्राण लेवी
- भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?
- कश्मीर कुसुम
- जातीय संगीत
- संगीत सार
- हिंदी भाषा
- स्वर्ग में विचार सभा

कहानी
- अद्भुत अपूर्व स्वप्न

यात्रा वृत्तान्त
- सरयूपार की यात्रा
- लखनऊ

आत्मकथा
- एक कहानी- कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

उपन्यास
- पूर्णप्रकाश
- चन्द्रप्रभा

Basic English and Advanced English Sentense

1. I'm very tired - I'm absolutely exhausted.
2. I don't like it - I'm not fond of it.
3. I'm busy right now - I'm currently occupied.
4. It's a big problem - It's a significant issue.
5. She's very smart - She's exceptionally intelligent.
6. I think it's good - In my opinion, it's quite satisfactory.
7. I want to help - I would like to offer my assistance.
8. He's angry - He's furious.
9. It's very cold - It's absolutely freezing
10. I'm happy - I'm delighted / overjoyed.
11. I'm hungry - I'm starving.
12. She's very beautiful - She's absolutely stunning.
13. He's good at English - He's proficient in English.
14. I'm not sure - I'm uncertain / I have some doubts.

डॉ. रत्नप्पा भरमप्पा कुम्भार: एक अमर देशभक्त और सामाजिक न्याय के योद्धा

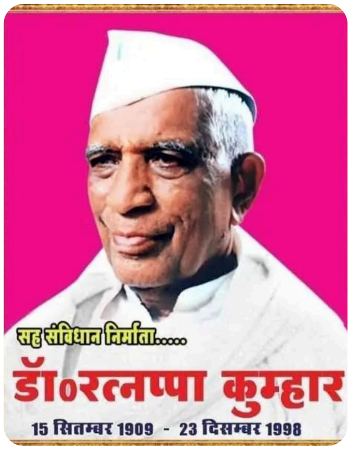

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के राष्ट्र निर्माण में अनेक ऐसे महान व्यक्तित्वों ने अपना योगदान दिया, जिनके नाम और कार्य इतिहास के पन्नों में कहीं धूमिल हो गए। ऐसे ही एक महानायक हैं *पद्मश्री डॉ. रत्नप्पा भरमप्पा कुम्भार*। उनका जीवन केवल एक स्वतंत्रता सेनानी का जीवन नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, शैक्षिक उन्नयन और सहकारिता के माध्यम से समाज के उत्थान का एक जीवंत दस्तावेज है। डॉ. कुम्भार का जन्म महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के एक निर्धन कुम्हार परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्होंने श्रमिकों और किसानों की पीड़ा को नजदीक से देखा और महसूस किया। राजर्षि शाहू जी महाराज द्वारा स्थापित शैक्षिक वातावरण ने उनमें सामाजिक न्याय की चिंगारी को प्रज्वलित किया। शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने वकालत का रास्ता चुना, लेकिन देश की गुलामी और सामाजिक विषमता ने उन्हें सीधे स्वतंत्रता आंदोलन और जन-जागरण के मैदान में खींच लिया।

उनकी देशभक्ति और संघर्ष का एक अनूठा पहलू था — *'प्रजा परिषद'* की स्थापना और *'डाक-गाड़ी लूट'* की वह साहसिक घटना। यह कोई सामान्य डकैती नहीं, बल्कि अंग्रेजी शासन की नाक में दम करने वाला एक सुनियोजित राजनीतिक प्रहार था। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस कार्रवाई में किसी की जान नहीं ली गई, बल्कि डाक के साथ मिले सर्टिफिकेट्स जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों को सुरक्षित वापस पहुँचाने का काम भी किया गया। यह घटना उनकी सूझ-बूझ, संगठन क्षमता और मानवीय संवेदनशीलता का बेजोड़ उदाहरण है। किंतु डॉ. कुम्भार का योगदान केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहा। आजादी के बाद, जब देश को एक ऐसे संविधान की आवश्यकता थी जो समता, स्वतंत्रता और बंधुत्व पर आधारित हो, तो वे *संविधान सभा के सदस्य* बने और डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे महान विचारक के प्रमुख सहयोगियों में से एक रहे। संविधान के अंतिम मसौदे पर उनके हस्ताक्षर उनके इस ऐतिहासिक योगदान का स्थायी प्रमाण हैं। सांसद, विधायक और मंत्री के रूप में उन्होंने महाराष्ट्र की जनता की सेवा की। उन्हें *'सहकारी आंदोलन का पुरोधा'* कहा जाता है। उन्होंने शिक्षा, कृषि, उद्योग और सहकारिता के क्षेत्र में दर्जनों संस्थानों की स्थापना की, जो आज भी समाज के वंचित तबकों के उत्थान में सक्रिय हैं। चीनी मिल, कॉलेज, स्कूल, सहकारी समितियाँ — ये सभी उनकी दूरदर्शिता और जनकल्याण के प्रति समर्पण के मूर्तिमान उदाहरण हैं। डॉ. रत्नप्पा कुम्भार का व्यक्तित्व इस बात का प्रतीक है कि *जन्म नहीं, कर्म* व्यक्ति को महान बनाते हैं। एक साधारण कुम्हार परिवार में जन्मे इस बालक ने न केवल अपने जीवन से सामाजिक बाधाओं को तोड़ा, बल्कि हज़ारों-लाखों लोगों के जीवन को शिक्षा, रोजगार और स्वाभिमान से जोड़कर एक नई दिशा दी। उन्हें *पद्मश्री* और *डी.लिट.* की मानद उपाधि जैसे सम्मान मिले, जो उनके अथक परिश्रम और राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण का सार्वजनिक स्वीकार थे।

निष्कर्षतः, डॉ. रत्नप्पा कुम्भार वह सेतु हैं जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम को उसके संवैधानिक लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के आंदोलन से जोड़ते हैं। उनका जीवन देशभक्ति, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का एक अद्भुत संगम है। उन्हें याद करना केवल अतीत को सलाम करना नहीं, बल्कि भविष्य के एक न्यायपूर्ण और समतामूलक समाज का निर्माण करने की प्रेरणा लेना है।

जय रत्नप्पा! जय संविधान! जय भारत!

Speaking words

Ace किसी काम में चतुर	He is an ace at dancing. वह नाचने में चतुर है।
Airy (a) हवादार (b) गंभीरता रहित	This building is very airy. यह इमारत बहुत हवादार है। Don't believe him, he is in the habit of making airy promises. उस पर विश्वास मत करो, उसे गंभीरता रहित वादे करने की आदत है।
Albeit यद्यपि	He is honest, albeit he is poor. वह ईमानदार है, यद्यपि वह गरीब है।
Anon अभी थोड़ी देर में, जल्दी	He is reaching anon at the railway station. वह अभी थोड़ी देर में रेलवे स्टेशन पर पहुँच रहा है।
Babby/Baby बच्चा	He is a pretty babby/baby. वह एक सुंदर बच्चा है।
Baccy तम्बाकू	Baccy is injurious to health. तम्बाकू सेहत के लिए हानिकारक है।
Baddy बुरा व्यक्ति	There are many baddies in our society. हमारे समाज में कई बुरे व्यक्ति हैं।
Bag जीतना	Our school has bagged the trophy. हमारे स्कूल ने ट्रॉफी जीत ली है।
Baggy ढीला ढाला	His shirt is baggy. उसकी कमीज़ ढीली ढाली है।
Baldy गंजे सिर वाला	He is a baldy guy. वह एक गंजे सिर वाला व्यक्ति है।
Balmy सुहावना	It was a balmy evening. यह एक सुहावनी शाम थी।
Ballsy उत्साही व दृढ़ इरादे वाला	He is a ballsy boy. वह उत्साही व दृढ़ इरादे वाला एक लड़का है।
Barney दलील	They quarrelled over a barney. वे एक दलील को लेकर झगड़ पड़े।
Bash एक बड़ी पार्टी या जश्न	He organised a birthday bash. उसने जन्मदिन की एक बड़ी पार्टी आयोजित की।
Batty सनकी	He is batty about cricket. वह क्रिकेट के बारे सनकी है।

1. PRIYANKA - 01-09-2002
2. SULENDER - 06-09-2002
3. MONIKA - 17-09-2001
4. SONAM - 28-09-1998
5. Liza = 08/09/2001
6. 2.Manju Rani = 13/09/2001
7. 3.Pooja = 01/09/2000

26 मार्च 1907 - 11 सितंबर 1987

न्यूज डायरी

हिंदी जन-जन की भाषा : डॉ. जगदीश

मुख्य वक्ता जगदीश चहल को सम्मानित करते कॉलेज स्टाफ। स्रोत : संस्थान

हिसार। गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पूर्व प्राचार्य डॉ. जगदीश चहल मुख्य वक्ता रहे। उन्होंने हिंदी भाषा की उत्पत्ति, विकास और विश्व स्तर पर इसकी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए हिंदी को जन–जन की भाषा बताया। उन्होंने दिनकर, निराला और दुष्यंत कुमार जैसे साहित्यकारों की पंक्तियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में संदीप, रीतू, किरण, विधि और नैंसी ने हिंदी कविताओं की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कार्यकारी प्राचार्य डॉ. अंजू चौधरी ने की जबकि प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र सेवदा विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम में डॉ. स्नेहलता, डॉ. देवेंद्र सिंह, डॉ. राजपाल, डॉ. वीरेंद्र सिंह, डॉ. सुमन आदि उपस्थित रहे। संवाद

प्रियंका

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. अपभ्रंश में 'पांडवपुराण' किसने लिखा ? - यशकीर्ति
2. सामान्यतः सिद्धों का समय माना जाता है? - ८ वीं से १३वीं शती तक
3. स्वयंभू के अपूर्ण ग्रंथ 'पउमचरिउ' को किसने पूर्ण किया? - स्वयंभू के पुत्र त्रिभुवन ने
4. अपभ्रंश का बाल्मीकि किसे कहा जाता है? - स्वयंभू को
5. अपभ्रंश के किस कवि ने अपने को 'अभिमान' मेरु कहा था? - पुष्पदंत
6. "अगर उनकी (जैनों की) रचनाओं के ऊपर से 'जैन' विशेषण हटा दिया जाय तो वे योगियों और तांत्रिकों की रचनाओं से बहुत भिन्न नहीं लगेंगी' - जैन साहित्य के संदर्भ में यह कथन किसका है? - हजारीप्रसाद द्विवेदी का
7. जैन कवियों ने कृष्ण कथा को क्या कहा है? - हरिवंश पुराण
8. जैन परंपरा के सर्वप्रथम कवि थे? - स्वयंभू
9. गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ कौन थे? - शिव
10. 'दुब्ब-सहाव-प्यास' नामक अप्रभंश रचना के रचयिता हैं? - देवसेन
11. "जो जिण सासण भाषियउ, सो मइ कहियउ सारु। जो पालइ सइ भाउ करि, सो सरि पावइ पारु।। - पंक्तियाँ किसकी हैं? - देवसेन
12. आचार्य शुक्ल ने 'रासो' शब्द की उत्पत्ति मानी है? -'रसायण' शब्द से
13. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'रासो' शब्द की उत्पत्ति किससे हुई है? - नाट्य उपरूपक 'रासक' से
14. खुमाण रासो' की भाषा है- राजस्थानी हिंदी
15. 'बीसलदेव रासो' है? - एक विरह-गीत-काव्य

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
अर्क	सूर्य
आर्क	सूर्य संबंधी
आर्कि	सूर्य के पुत्र यम
अयस	लोहा
आयसु	आज्ञा
आय	आमदनी
आयु	उम्र
आगम	वेद संबंधी शास्त्र
निगम	वेद आदि ग्रंथ

हिंदी हमारा अभिमान, बढ़ रहा मान

शिक्षा, साहित्य, सोशल मीडिया और तकनीक में भी हिंदी ने बनाई अपनी मजबूत पहचान

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। वर्तमान समय में हिंदी सिर्फ संवाद की भाषा नहीं रही, बल्कि शिक्षा, साहित्य, सोशल मीडिया और तकनीक में भी अपनी मजबूत पहचान बना रही है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हिंदी की स्थिति पहले से काफी सशक्त हुई है जहां पहले इसे सिर्फ साहित्यिक भाषा के तौर पर देखा जाता था, वहीं अब शोध, पत्रकारिता, प्रशासनिक परीक्षाओं और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी की मांग तेजी से बढ़ रही है।

विश्व हिंदी दिवस

उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्र-छात्राएं न केवल हिंदी साहित्य पढ़ रहे हैं, बल्कि हिंदी माध्यम से अन्य विषयों की पढ़ाई और शोध कार्य भी कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक आधुनिक और वैश्विक भाषा के रूप में महत्व दिया जा रहा है।

हिंदी दिवस हमें याद दिलाता है कि अपनी भाषा को सम्मान देना हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है, लेकिन हिंदी के समक्ष चुनौतियां भी हैं। आज भी इसे युवा वर्ग रोजगार की दृष्टि से अंग्रेजी की तुलना में कमतर आंकता है। हिंदी भाषी राज्यों के अलावा भी देश के अन्य राज्यों में हिंदी ने महत्व को लगातार बढ़ाया है।

हिंदी बोलने-समझने वालों की संख्या बढ़ रही

" वर्तमान में हिंदी विरोधाभासी दौर से गुजर रही है। एक ओर डिजिटल युग में इसका प्रसार पहले से कहीं अधिक हुआ है, सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफॉर्म्स और ऑनलाइन शिक्षा ने इसे नई पहुंच दी है। हिंदी बोलने-समझने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वहीं दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण हिंदी को अक्सर प्रतिष्ठा का मुद्दा बना दिया जाता है। हिंग्लिश का चलन बढ़ा है, जो एक तरह से भाषा के लचीलेपन को दिखाता है पर शुद्धता के साथ समझौता भी करवाता है। सबसे बड़ी चुनौती हिंदी को रोजगार और ज्ञान की भाषा बनाने की है, न कि केवल बोलचाल तक सीमित रखने की। **-डॉ. राजपाल, हिंदी विभाग, राजकीय महाविद्यालय हिसार।**

" हिंदी भाषा मीडिया, सिनेमा, गीत-संगीत और सोशल मीडिया के माध्यम से जनमानस तक गहराई से पहुंच चुकी है। समाचार पत्र, टीवी और डिजिटल प्लेटफार्म पर इसकी उपस्थिति तेजी से बढ़ रही है। साहित्यिक क्षेत्र में भी हिंदी ने नए आयाम प्राप्त किए हैं, जहां स्त्री विमर्श, प्रवासी अनुभव और डिजिटल लेखन प्रमुख धारा बन चुके हैं। हालांकि उच्च शिक्षा, विज्ञान और तकनीक में हिंदी के प्रयोग की चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं, विशेषकर वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली और शोध कार्यों की कमी। इसके बावजूद डिजिटल युग ने हिंदी को नई शक्ति दी है।
- सचिन गौतम, पीएचडी शोधार्थी, हिंदी विभाग, जीजेयू।

" हिंदी ने साहित्य और पत्रकारिता दोनों क्षेत्रों में निरंतर प्रगति की है। कविता, कहानी, उपन्यास व आलोचना में नए प्रयोग हुए हैं, वहीं प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया में हिंदी ने अपनी मजबूत पहचान बनाई है। गूगल, यूट्यूब, व्हाट्सएप और सोशल मीडिया प्लेटफार्म ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुंचा दिया है। अमेरिका, यूरोप और एशिया के कई देशों में हिंदी पढ़ाई और सिखाई जा रही है। डिजिटल युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और वॉइस रिकग्निशन ने इसके नए आयाम खोले हैं। विज्ञापन, मनोरंजन और फिल्म उद्योग में भी हिंदी की महत्ता बढ़ी है।
- नविता, पीएचडी शोधार्थी, हिंदी विभाग, जीजेयू।

" हिंदी भाषा का महत्व लगातार बढ़ रहा है। पहले जहां विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम पर अधिक निर्भर रहते थे, वहीं अब धीरे-धीरे उनका रुझान हिंदी की ओर बढ़ रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं में भी बच्चे हिंदी माध्यम से तैयारी कर सफलता प्राप्त कर रहे हैं। नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों ने हिंदी विषय को प्राथमिकता से लेना शुरू किया है। इससे हिंदी भाषा के विकास और भविष्य दोनों को मजबूती मिल रही है।
- सुनीता, असिस्टेंट प्रोफेसर, महिला कॉलेज।

" हिंदी दिवस के अवसर पर कहा जा सकता है कि आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, बल्कि एक वैश्विक भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही है। इसका सबसे बड़ा कारण है हिंदी भाषी लोगों का देश के अलग-अलग राज्यों और विदेशों में रहना। वे जहां भी जाते हैं, अपनी संस्कृति और भाषा को साथ लेकर जाते हैं। यही कारण है कि हिंदी और उससे जुड़ीं बोलियां आज विश्वभर में लोकप्रिय हो रही हैं।
- प्रोफेसर राकेश बहमनी, विभागाध्यक्ष, हिंदी, जीजेयू।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Grace period = अनुग्रह अवधि

Gradation list = पदक्रम सूची

Gradual recovery = क्रमशः वसूली

Grant = अनुदान (RAS-97)

Gratuity = उपदान/आनुतोषिक

Grave misconduct = घोर दुर्व्यवहार

Grievance = शिकायत

Gross = सकल/कुल/घोर/भारी

Guarantee = गारंटी/प्रत्याभूति

Guiltless निरपराध

Habeas Corpus = बंदी प्रत्यक्षीकरण

Habitual defaulter = आभ्यासिक दोषी

Habitual offender = आभ्यासिक अपराधी

Handicape = बाधा/असमर्थता

Handle = दस्ता/हस्था/सँभालना

Handover = सौंपना

Hard and fast rule = पक्का नियम

Head = शीर्ष/मद/प्रधान

Hierarchy = उन्क्रम/सोपान/धर्मसत्ता

Hereby empowered = एतद् द्वारा अधिकृत

His Excellency = परमश्रेष्ठ

His Majesty = महामहिम

Holding = खेत/जोत

Homage = श्रद्धांजलि

Hon'ble = माननीय

Honorarium मानदेय

Honorary = अवैतनिक

Hours of business = कार्यसमय

Hours of Employment = काम के घंटे

House of people = लोकसभा

House rent = मकान किराया

राष्ट्रीय एकता की संवाहक है हिंदी

भारत में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन हमें हमारी राजभाषा के महत्व के प्रति सजग करता है और राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में इसकी भूमिका को रेखांकित करता है। वर्ष 2025 की थीम "राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान की ताकत" इसी दिशा में एक सार्थक पहल है। हिंदी न केवल एक भाषा है, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय एकता की संवाहक है। देश की विविधताओं के बीच हिंदी एक सूत्र का कार्य करती है, जो विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और संस्कृतियों के लोगों को आपस में जोड़ती है। यह भाषा हमें हमारी साझी विरासत और मूल्यों की याद दिलाती है, जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है। हिंदी के माध्यम से हम एक-दूसरे की भावनाओं, विचारों और आकांक्षाओं को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं, जो राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वैश्विक स्तर पर हिंदी ने भारत की पहचान को एक नई दिशा दी है। आज विश्व के कई देशों में हिंदी बोली, पढ़ी और समझी जाती है। यह भाषा भारत की सॉफ्ट पावर का एक प्रमुख हिस्सा बन गई है, जो वैश्विक समुदाय के साथ संवाद स्थापित करने में मदद करती है। हिंदी के बढ़ते प्रभाव ने न केवल भारतीय संस्कृति और साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई है, बल्कि इसने देश की आर्थिक और राजनीतिक छवि को भी मजबूत किया है। विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार से भारत का वैश्विक प्रभाव बढ़ा है और इसने दुनिया भर में भारतीयों को एक नई पहचान दी है।

हिंदी दिवस 2025 की थीम हमें यह संदेश देती है कि हिंदी के विकास और प्रसार से न केवल राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी, बल्कि इससे भारत की वैश्विक पहचान भी सशक्त होगी। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना होगा और इसे आधुनिक तकनीक से जोड़ना होगा। शिक्षा, प्रशासन, मीडिया और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करके हम इसे और अधिक गतिशील बना सकते हैं।

हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम हिंदी के महत्व को पहचानेंगे और इसे राष्ट्रीय एकता वैश्विक पहचान का माध्यम बनाएंगे। हिंदी हमारी अमूल्य धरोहर है, जिसे संजोकर रखना हमारा कर्तव्य है। आइए, हिंदी को भारत की एकता और वैश्विक पहचान का प्रतीक बनाएं। हमारा कर्तव्य है कि हम हिंदी को केवल भाषा न समझें, बल्कि इसे अपनी राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान की मजबूत कड़ी बनाएं। हिंदी से जुड़कर हम न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोएंगे, बल्कि एक समृद्ध और विकसित भारत की तरफ कदम बढ़ाएंगे। आइए, हिंदी को अपनाएं, इसका सम्मान करें और इसे दुनिया के सामने भारत की असली ताकत के रूप में प्रस्तुत करें। यही हमारा संकल्प और हमारी पहचान होगी।

ज्योतिराव फुले: प्रथम शिक्षक और सामाजिक क्रांति के अग्रदूत

ज्योतिराव गोविंदराव फुले का नाम भारतीय शिक्षा और सामाजिक क्रांति के इतिहास में एक मील का पत्थर है। उन्नीसवीं शताब्दी के उस दौर में, जब शिक्षा पर सिर्फ उच्च वर्गों का एकाधिकार था, फुले ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उन्हें 'भारत के प्रथम शिक्षक' की उपाधि इसलिए मिली, क्योंकि उन्होंने दलितों और स्त्रियों के लिए पहला स्कूल खोलकर शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाया। फुले का जन्म 1827 में एक माली परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर 1848 में पुणे में पहला बालिका विद्यालय शुरू किया। यह कदम तब अभूतपूर्व था, जब स्त्री-शिक्षा को समाज पाप मानता था। फुले का मानना था कि बिना शिक्षा के समाज में फैली गुलामी और अंधविश्वास की जंजीरें नहीं तोड़ी जा सकतीं। उनकी शिक्षा-दर्शन में आलोचनात्मक चिंतन केंद्रीय था। फुले चाहते थे कि शिक्षा छात्रों को रट्टू तोता न बनाए, बल्कि उनमें तर्कशक्ति और विवेक का विकास करे। उन्होंने 'गुलामगिरी' जैसी पुस्तक लिखकर जाति-आधारित उत्पीड़न के खिलाफ सशक्त वैचारिक हमला किया। फुले के लिए शिक्षा सिर्फ पढ़ने-लिखने तक सीमित नहीं थी, बल्कि वह सामाजिक न्याय की लड़ाई का माध्यम थी। फुले की सामाजिक क्रांति की अवधारणा के तीन प्रमुख स्तंभ थे - शिक्षा का लोकतंत्रीकरण, स्त्री-मुक्ति और जाति-उन्मूलन। उन्होंने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना करके ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी और समान मानवीय अधिकारों का आंदोलन छेड़ा। फुले का कहना था कि जब तक शूद्रों और अति-शूद्रों को शिक्षा से वंचित रखा जाएगा, तब तक समाज में परिवर्तन असंभव है। आज के संदर्भ में फुले के विचार और भी प्रासंगिक हो उठे हैं। भारत में शिक्षा के असमान वितरण, जातिगत भेदभाव और नारी उत्पीड़न की घटनाएं आज भी जारी हैं। फुले का दर्शन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सिर्फ डिग्री देना नहीं, बल्कि एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना है। हालाँकि, फुले के कार्यों की कुछ सीमाएँ भी रहीं। उनका आंदोलन मुख्यतः महाराष्ट्र तक सीमित रहा और वह औपनिवेशिक शासन के दौरान सामाजिक परिवर्तन की गति को पूरी तरह नहीं बदल सके। परंतु उन्होंने जो बीज बोए, वे आगे चलकर डॉ. भीमराव आंबेडकर जैसे चिंतकों के माध्यम से पूरे भारत में फैले। निष्कर्षतः, ज्योतिराव फुले ने शिक्षा को सामाजिक बदलाव की कुंजी के रूप में स्थापित किया। वे न सिर्फ भारत के प्रथम शिक्षक थे, बल्कि एक ऐसे विचारक भी थे, जिन्होंने शिक्षा और सामाजिक न्याय के बीच अटूट संबंध स्थापित किया। आज जब हम शिक्षा के अधिकार और समान स्कूल प्रणाली की बात करते हैं, तो फुले का संघर्ष हमारे लिए मार्गदर्शक बन जाता है। उनकी विरासत हमें यह सबक देती है कि शिक्षा सबके लिए सुलभ होनी चाहिए, तभी एक समतामूलक समाज की स्थापना संभव है।

पुस्तक समीक्षा

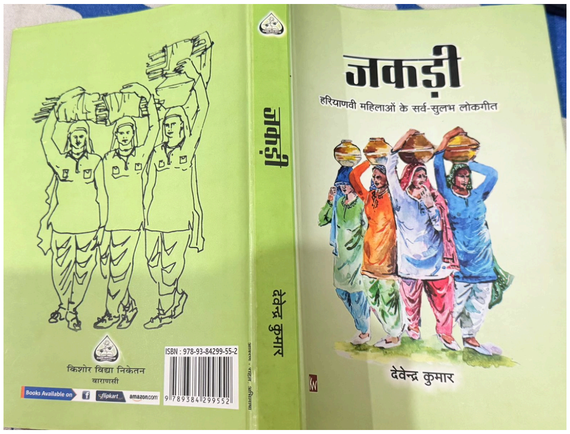

लेखक: डॉ. देवेन्द्र कुमार
पुस्तक: "**जकड़ी** हरियाणवी महिलाओं के सर्व-सुलभ लोकगीत" मूल्य: ₹350.00 किशोर विद्या निकेतन वाराणसी

डॉ. देवेंद्र कुमार की पुस्तक 'जकड़ी' हरियाणवी लोकगीतों पर केन्द्रित एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व का कार्य है। यह पुस्तक न केवल एक उपेक्षित लोकगीत को अकादमिक प्रतिष्ठा दिलाती है, बल्कि हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का एक सार्थक प्रयास भी है। लेखक ने 'जकड़ी' गीतों का गहन अध्ययन कर उन्हें एक व्यवस्थित रूप प्रदान किया है, जो भविष्य के शोधार्थियों के लिए एक मानक सन्दर्भ ग्रन्थ का कार्य करेगा।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी समन्वयात्मक शोध पद्धति है। डॉ. देवेंद्र ने प्राथमिक स्रोतों के रूप में गीत गाने वाली महिलाओं के साक्षात्कार लिए और द्वितीयक स्रोतों के रूप में मुद्रित सामग्री का उपयोग किया। यह दोहरी पद्धति उनकी शोध-निष्ठा को दर्शाती है। उन्होंने लोक साहित्य को शास्त्रीयता प्रदान करने का सफल प्रयास किया है, जो अकादमिक जगत में एक नई पहल है।

पुस्तक का वर्गीकरण भी उल्लेखनीय है। लेखक ने 'जकड़ी' गीतों को विभिन्न श्रेणियों में बाँटकर उनकी विषय-वस्तु और सामाजिक प्रासंगिकता को स्पष्ट किया है। यह वर्गीकरण न केवल व्यवस्थित है बल्कि लोकमानस की सहज अभिव्यक्ति को भी प्रतिबिंबित करता है।

हालाँकि, पुस्तक की एक सीमा यह है कि लेखक ने 'जकड़ी' के ऐतिहासिक पक्ष और उसकी उत्पत्ति से जुड़ी लोकपरम्परा पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला है। जैसा कि प्राक्कथन में उल्लेख है, 'जकड़ी' एक ऐतिहासिक नारी पात्र से जुड़ी है, जिसके बारे में और गहन शोध की संभावना बनी रहती है।

'जकड़ी' पुस्तक लोक साहित्य के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित होगी। डॉ. देवेंद्र कुमार ने न केवल एक लोकगीत को संरक्षित किया है बल्कि उसे राष्ट्रीय पटल पर प्रतिष्ठित भी किया है। यह पुस्तक सांस्कृतिक शोधार्थियों, समाजशास्त्रियों और लोक साहित्य के प्रेमियों के लिए समान रूप से उपयोगी है। डॉ. देवेंद्र कुमार इस पुस्तक के माध्यम से लोक संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है जो हिंदी साहित्य में सदा स्मरणीय रहेगा ।

डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार